कविता कर्मकार की तीन कविताएं

(1)

इतिहास

शिरीष की जड़ों में
दफ़्नहै हमारा इतिहास
दिल में निचोड़ दी गयी है
चाय-पत्तियों की सुगंध
मुझे बधिर बनाते
शोषित प्रताड़ित पूर्वजों की आर्त आवाजें

सम्भोग और निद्रा के हर पल
भूख की ज्वाला में जलकर राख हो जाते
इतिहास में
मार्क्स, लेनिन अथवा बुद्ध की ज्ञान दीक्षा
दुर्बुद्धि थी उस काल में

उनमें प्रतिवाद के पन्ने
कोरे ही रह गये
अथवा किसी ने भी नहीं खाया
ज्ञान वृक्ष का कोई फल

एक दिन ...
गंदी नालियों के कीड़ों की तरह
प्रतिबाहित जीवनयापन से
अँधेरा मिटेगा
पेड़ों में रोशन होगा चिड़ियों का घोसला
गीत गाये जाएँगे भोर के
यातना और भूख से मिलेगी मुक्ति
इतिहास के पन्ने भरे जाएंगे
नयी कहानियों से

कुछ आप लिखोगे
कुछ हम लिखेंगे

हम सबके खून का रंग एक है
भूख की भी रहेगी एक ही संज्ञा
मेरी तरह हाहाकार नहीं करेगा कोई
पूर्वजों की कब्र में
लिखा गया उन मिथकों को याद करके

(2)

जाड़े की रात

जाड़े की रात में
हमारे छोटे -छोटे घरों में वे आग लगाते हैं
उस आग से सेंकते हैं अपना कलेजा
हमारे अरण्य रोदन में
ठहाके लगाकर हँसते

आग पसरती एक गाँव से दूसरे गाँव तक
एक शहर से दूसरे शहर तक
भौगोलिक सारी सीमाओं को पार कर
आग फैलती है
गलियों से गाँव तक
हर शहर तक
सीधे - साधे लोगों के दिलों तक
सोते बच्चे की तरह शांत
चेहरे और आँखो तक
खून से भीगे सूर्यमुखी फूलों तक

खून के नशे में मदहोश हैंसब
प्रतिरोध और प्रतिवाद में

प्रतिदिन जंगी होते हैं
नशेड़ी रातें क्रोध में हुंकारती हैं

कितनी बार कितने दिन कितनी रातें
देखी हमने
मुखौटे उतरते चेहरे
मुखौटे की आड़ में नये चेहरे
सब देखा हमने
परिचित चेहरे की आड़ में अपरिचित चेहरे

समझकर भी नहीं समझ सके वहगोपनीय कथा
युध्दकालीन तत्परता में
कैसे बदलते हैं सारे
मेकअप रूम राजा को प्रजा बनाती
प्रजा को राजा
और दुश्मनों को दोस्त
भोग और लालसा के लिये
अपने बनते पराये
अदृश्य इशारे सबको नचाती
पुतले बनकर रह जाते सब

छल से, कहाँ से आते हैं
हमारे हिस्सों के
भोग के दाने
प्यार के बोल

कनाट से
चमत्कारी इश्तहार उड़ते
मोल भाव चलते हैं
हमारे सपनों और सांसो के

(3) युद्ध

बाँटा तो यूं बाँटा
न हम अलग रहे न मिल पाए !
युद्धोन्माद कभी युद्ध में नहीं जाते ! !
बस मृत्यु पर हर्षोल्लास करते ठहाके लगाकर !

असल युद्ध तो वे लड़ते हैं
जिन्हें आस रहती है कि युद्ध कभी न हो !
जो चिट्ठियों में लपेटकर प्यार भेजते हैं राखी की डोरी में !
विरह के अगन में झुलसते हुए प्रीत को
दूर से ही एक साथ चाँद को देखकर दिल बहलाते !
अनायास बहती अश्रुधारा को व्यर्थ छुपाते हुए
बेचैनी और शंका के भँवर में बस डूबते हैं और डूबते चले जाते हैं !
युद्ध उनका होता है !

राजनीति की हठकारिता को बिना समझे नियति मान लिया जाता है !
असल युद्ध तो उनका होता है
जिनके लिए बारूद बस रोटी का अंतिम साधन बनता है !
असल युद्ध वहाँ होता है
दबी स्वर से प्रार्थना गूंजती है जिन प्रार्थना गृहों में
सिसकते हिमखंड पिघलते-पिघलते ख़त्म नहीं होते

अथवा यू मानें
किसी की प्रतीक्षित कुशल वार्ता के लिए
बेबसी बेचैनी बेबाक होती है अँधेरे में !
उस अँधेरे से कभी पूछा जाये तो जाने युद्ध होता क्या है !

युद्ध उनका होता है
जो थमे हुए वक़्त के एकांत में
अंदर से टूट बिखर कर भी हौसला बनते हैं
हौसले होते हैं पोशीदा
कपाल में रेखांकित उम्र भर की प्रौढ़ता !

युद्ध की नियति हर पक्ष के लिए एक ही होती है !

(**लेखकीय परिचय:** कविता कर्मकार असम की चर्चित कवयित्री और अनुवादक हैं।)